संस्कृत भारती, गुजरात द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय संस्कृत सम्मेलन में दिनांक २५ दिसंबर, २०१५ को गुजरात के राज्यपाल श्री ओ०पी० कोहली जी के संकलित अंश।

- सस्कृत भारती, गुजरात द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय सस्कृत सम्मेलन मे आप सभी के बीच उपस्थित रहकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।
- आज के इस प्रान्तीय सम्मेलन में इतनी बड़ो सख्या मे सस्कृत कार्यकर्ताओ की उपस्थिति वास्तव मे सराहने योग्य है।
- यह सुविदित ही है कि गगा, सिन्ध और सरस्वती नदियो के किनारों पर विकसित हुई हमारी सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओ मे से एक है। यह भी सुविदित ही है कि इस पवित्र सस्कृत भाषा की सान्निध्य मे ही हमारी सभ्यता बौद्धिक भौतिक समृद्धि के शिखर पर रही है। भारतीय संस्कृति एव परम्पराओ के आधारभूत लगभग सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही लिखे गए है। प्राचीन काल से विभिन्न ज्ञान शाखाओ के श्रेष्ठ भारतीय विद्वानो ने अपने चिरन्तन ज्ञान की अभिव्यक्ति के लिए प्राय: सस्कृत भाषा का ही चयन किया ह। इसका कारण भी स्पष्ट ही है। हमारे पूर्वजो ने इस भाषा को इस प्रकार से परिष्कृत किया, जिससे की वह हमारे चिरन्तन ज्ञान को आगे की पीढ़ियो तक पहुंचाने का आदर्श साधन सिद्ध हो सके। संस्कृत भाषा सरस्वती नदी के समान है। सरस्वती नदी कही दिखती नही है, किन्तु वेदों मे सरस्वती की स्तुती में कई सूक्त लिखे गये हैं। भारतीयो मे एसी श्रद्धा है कि प्रयागतीर्थ पर गगा, यमुना एव सरस्वती का सगम होता है। हम कहते है कि सरस्वती नदी गुप्त है, पर अभी अभी विभिन्न अनुसन्धानो एवं सेटेलाईट चित्रो से सरस्वती नदी के अस्तित्व को प्रमाणित भी किया गया है।
- आज दैनन्दिन व्यवहार में सस्कृत भाषा का उपयोग विरल है, किन्तु सरस्वती नदी की तरह संस्कृत आज भी विद्यमान है। सस्कृत भाषा हमारे रक्त मे है। सस्कृत भारत की आत्मा है। आज भी रामायण, महाभारत, वेद इत्यादि सस्कृत साहित्य का भारतीय समाज जीवन पर गहरा प्रभाव नज़र आता है। आज भी एक आम भारतीय के जीवन के सभी महत्वपूर्ण प्रसगो पर सस्कृत श्लोकों एव मन्त्रो का गान अवश्य होता है। स्वय भारत सरकार तथा विविधक्षेत्रो मे कार्यरत भारत की प्राय: सभी महत्वपूर्ण सस्थाओं के ध्येयवाक्य सस्कृत में ही है। जिन आधनिक भारतीय भाषाओं का प्रयोग हम दैनन्दिन जीवन में करते हैं, उनमे बड़ो मात्रा मे सस्कृत तत्सम और तद्भव शब्द पाये जाते है।
- हमारे वेदो, पुराणो, भगवद्गीता इत्यादि आदरणीय ग्रन्थो का अस्तित्व सस्कृत के अस्तित्व पर ही निर्भर है। सस्कृत एक भाषा है, अत: उसका अस्तित्व अपने दैनन्दिन जीवन मे भाषा का प्रयोग करनेवाले मनुष्यो पर निर्भर करता है। यदि हम अपने जीवन में संस्कृत का प्रयोग करें तो सस्कृत जीवित रहेगी। यदि भारतीयता के आधारभूत रामायण, महाभारतादि अनेक ग्रन्थो को हम खोना न चाहते हैं तो संस्कृत को अपने दैनिक व्यवहार मे लाना अत्यन्त आवश्यक है। संस्कृत शास्त्र, पुराण, वेदादि केवल पडितो के लिए नहीं है। इनमे हम सभी के लिये जीवनोपयोगी अमूल्य मार्गदर्शन है। अनुवाद की सहायता के बिना सीध इन तक पहुचने के लिए भी सस्कृत का अध्ययन नितान्त आवश्यक है। गुजराती, मराठी, हिन्दी इत्यादि आधुनिक मातृभाषाओ के अविरत विकास के लिए भी सस्कृत अत्यन्त आवश्यक है। समय के साथ-साथ यदि इन भाषाओं का एसा विकास न हो पाया तो यह भी दीर्घकाल तक जीवित नहीं रह पायेगी।
- राष्ट्रोय सस्कृत सस्थान द्वारा आरम्भिक स्तर से लेकर प्रगत स्तर तक अत्यन्त साक्षात पाठन पद्धति से सस्कृत सिखाने के लिए अनुभवी विद्वानो के मार्गदर्शन से पचस्तरीय पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। इसकी विस्तृत पाठन सामग्री किसी भी सस्कृत जिज्ञासु के लिए किफ़ायती दामो मे उपलब्ध है, यह सराहनीय है। सस्थान द्वारा सामान्य लोगो के व्यवहार मे संस्कृत पहुचाने के लिए इसी पाठ्यक्रम पर आधारित अनौपचारिक सस्कृत शिक्षण केन्द्र नामक योजना भी चलाई जा रही है। इसी पाठ्यक्रम पर आधारित दृश्य-श्राव्य पाठ भी इन्टरनेट पर नि:शुल्क उपलब्ध है। दिल्ली स्थित संस्कृत संवधन प्रतिष्ठान ने सी०बी०एस०ई० की संस्कृत पाठ्यपुस्तको पर आधारित सस्कृत छात्रो, शिक्षकों एवं संस्कृत जिज्ञासुओ को अत्यन्त उपयोगी संस्कृत ट्युटोरिअल्स तैयार किए है। यह भी इन्टरनेट पर नि:शुल्क डाउनलोड किये जा सकते है।
- आज के इस प्रान्तीय सम्मेलन मे सस्कृत भारती के कार्यकर्ता उपस्थित है, तब मै कहना चाहूगा कि हमारी इस गौरवशाली सस्कृत भाषा का आमजन तक प्रचार-प्रसार हो एसे प्रयासों को बढ़ावा देना है। मुझे विश्वास है कि आप यहा उपस्थित सभी उस उदात्त कार्य मे अपना बहुमूल्य योगदान देगे।
- अत मे मुझे इस सम्मेलन मे आमत्रित किया इसलिए सस्था का मैं आभारी हू और यहां उपस्थित सभी को मेरी शुभकामनाए।

धन्यवाद। जयहिन्द।